Gg – स्वर्ग के राज्य में सबसे महान मत्ती १८:१-५; मरकुस ९:३३-
३७; लूका ९:४६-४८ | 1

– Save This Page as a PDF–

स्वर्ग के राज्य में सबसे महान

मत्ती १८:१-५; मरकुस ९:३३-३७; लूका ९:४६-४८

खोदाई: प्रेरित किस विषय पर चर्चा और बहस कर रहे थे? यीशु ने उनका विवाद कैसे सुलझाया? उन्होंने किस गुणवत्ता की माँग की? मसीहा के अनुसार, प्रभु की दृष्टि में कौन महान है? स्वयं को एक बच्चे की तरह विनम्र बनाने का क्या मतलब है? आपको क्या लगता है कि यह येशुआ के राज्य के लिए महत्वपूर्ण क्यों है? प्रभु ने बच्चों की तरह दीन और क्षमाशील लोगों के महत्व को कैसे दर्शाया?

चिंतन: हम बार-बार अपने आप से इतने भरे हुए क्यों हो जाते हैं? क्या होता है जब आप अपनी तुलना दूसरे लोगों से करने लगते हैं? विनम्रता का वर्णन करें तथा कुछ उदाहरण दीजिए। हमारा समाज प्राचीन रोमन साम्राज्य से थोड़ा अलग है। हमारे पड़ोसी और सहकर्मी किन प्रमुख मूल्यों का पालन करते हैं? दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना याद रखना इतना कठिन क्यों है? अभिमान के खतरे क्या हैं?

दूसरी बार जब येशुआ ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की (देखें Ge– यीशु ने दूसरी बार अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की), तल्मिडिम ने गर्व और गलतफहमी के साथ जवाब दिया। इस घटना से बेहतर कोई भी चीज़ यह नहीं दिखाती कि बारह लोग यीशु के मसीहापन के वास्तविक अर्थ को समझने से कितने दूर थे। उसने उन्हें बार-बार बताया था कि येरूशलेम में उसका क्या इंतजार है। फिर भी, यह स्पष्ट था कि वे अभी भी मसीह के साम्राज्य को एक सांसारिक राज्य के रूप में सोच रहे थे, और स्वयं को उसके राज्य मंत्री के रूप में सोच रहे थे।

वे कफरनहूम आये और प्रेरितों के बीच बहस छिड़ गयी। मसीहा के सूली पर चढ़ने और उसके अनुयायी के इस बारे में बहस करने के बारे में कि सबसे महान कौन था, कुछ हृदयविदारक है। हालाँकि, अपने दिल में, वे जानते थे कि वे गलत थे क्योंकि जब येशुआ घर में था और उनसे पूछा: तुम सड़क पर किस बारे में बहस कर रहे थे? उनके पास कहने को कुछ नहीं था. परन्तु प्रेरित चुप रहे क्योंकि मार्ग में वे आपस में इस बात पर वाद-विवाद कर रहे थे कि सबसे बड़ा कौन है (मरकुस ९:३३-३४; लूका ९:४६)। उनके पास कोई बचाव नहीं था। यह दिलचस्प है कि कैसे चीजें अपना उचित स्थान ले लेती हैं और इसका असली चरित्र तब दिखाई देता है जब इसे यीशु की नजरों में स्थापित किया जाता है।

Gg – स्वर्ग के राज्य में सबसे महान मत्ती १८:१-५; मरकुस ९:३३-
३७; लूका ९:४६-४८ | 2

जब तक वे सोचते थे कि ईसा मसीह सुन नहीं रहे हैं और उन्होंने देखा नहीं है, तब तक यह तर्क काफी उचित लगता था, लेकिन जब यह मास्टर की उपस्थिति के सामने आया तो यह अचानक अपनी सारी अयोग्यता में दिखाई देने लगा। यदि हम ऐसे बोलें और कार्य करें जैसे कि वह प्रभु की उपस्थिति में हों तो इससे दुनिया में बहुत फर्क आएगा। कार्य करने से पहले यदि हम स्वयं से पूछें, “यदि यीशु मुझे देख रहा होता तो क्या मैं ऐसा करना जारी रख सकता था?” या अगर हमने पूछा, “अगर प्रभु मेरी बात सुन रहे होते तो क्या मैं इसी तरह बात करता रह सकता?” ऐसी कई चीज़ें होंगी जिन्हें हम करने या कहने से बच जाएंगे। और यदि सत्य ज्ञात होता, तो विश्वासियों के लिए, हम जो कुछ भी करते और कहते हैं वह उसकी उपस्थिति में होता है। आत्मा हमें पाप के लिए दोषी ठहराती है और हमें उन शब्दों का उपयोग करने या ऐसे कार्य करने से दूर रहने की याद दिलाती है जिन्हें सुनने या देखने पर हमें शर्म आएगी। आप शायद अपने पिता से छिप सकते हैं, और शायद अपनी माँ से भी, लेकिन आप यीशु से छुप नहीं सकते।

यह खंड तब आता है जब मसीहा ने पतरस को अपने मंदिर के कर के साथ-साथ पतरस को भी भुगतान करने की व्यवस्था की थी (मती १७:२५)। पतरस ने शायद सोचा कि वह विशेष है। जैसे, प्रभु के पास उसके लिए कुछ “विशेष” था! और उसने किया. पतरस को सूली पर उल्टा लटकाया गया। किसी तरह मुझे नहीं लगता कि पतरस के मन में यही बात थी। इसके अलावा, यह घटना रूपान्तरण के बाद आई जिसमें तीन प्रेरितों को राजाओं के राजा को उसकी संपूर्ण महिमा में देखने की अनुमति दी गई और बाकी को नहीं। किसी भी दर पर, एक बहस छिड़ गई।

उस समय शिष्यों यीशु के पास आया और पूछा: तो फिर, स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है (मती १८:१)?” मती स्वर्ग के राज्य का उपयोग करता है क्योंकि वह यहूदी दर्शकों से बात कर रहा है। यहूदी तब भी, आज भी, ईश्वर शब्द का प्रयोग करने से बचते हैं क्योंकि यह उनके लिए बहुत पवित्र है। उन्होंने अडोनाई, या प्रभु नाम प्रतिस्थापित कर दिया, लेकिन रूढ़िवादी यहूदियों जैसे कुछ लोगों के लिए, वह नाम भी बहुत पवित्र है। इसलिए रूढ़िवादी यहूदी आज हाशेम, या “नाम” का उपयोग करते हैं। लिखते समय, वे कभी भी “नाम” का पूरा उच्चारण नहीं करते थे, इसलिए वे जी-डी लिखते थे।

वे इस बात पर बहस कर रहे थे कि जब मसीहा साम्राज्य की स्थापना होगी तो उसमें सबसे बड़ा पद किसका होगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में कितनी बार बात की, उन्हें यह बात समझ में नहीं आई। उन्होंने सोचा कि मसीहा साम्राज्य की शुरुआत निकट थी। उनमें श्रेष्ठता की भावना थी। इसलिए, येशुआ एक छोटे बच्चे का उपयोग करके उन्हें बच्चों जैसा होने का पाठ पढ़ाते हैं।

जब नेपोलियन बोनापार्ट को सेंट हेलेना द्वीप पर निर्वासित किया गया, तो उनके एक मित्र ने उनसे पूछा, “दुनिया में अब तक ज्ञात सबसे महान योद्धा कौन था?” नेपोलियन

Gg – स्वर्ग के राज्य में सबसे महान मत्ती १८:१-५; मरकुस ९:३३-
३७; लूका ९:४६-४८ | 3

ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया, “यीशु मसीह।” “लेकिन,” उसके दोस्त ने कहा, “आप हमेशा इस तरह से बात नहीं करते हैं। जब आप लड़ाइयाँ जीत रहे थे, यहाँ तक कि वाटरलू की लड़ाई तक, आपने यह धारणा छोड़ी कि आप दुनिया के सबसे महान योद्धा थे।

नेपोलियन ने इस प्रकार उत्तर दिया, “हां, मैंने हमेशा ऐसा व्यवहार किया है जैसे मुझे लगा कि मैं दुनिया का सबसे महान विजेता हूं। जब से मैं इस द्वीप पर हूं, मुझे सोचने के लिए बहुत समय मिला है। सीज़र्स, अलेक्जेंडर द ग्रेट, हैनिबल, शारलेमेन, और मैं – हम खून और आँसुओं, तलवारों और लोहे से लड़े हैं, और हम हार गए। हम सब हार गए. हमने अपने राजदंड, अपने राजमुकुट और अपने कार्यालय खो दिये। मसीह के पास एकमात्र तलवार एक टूटा हुआ नरकट था: उसका मुकुट, कुछ मुड़े हुए कांटे। उनकी सेना, मछुआरों और किसानों का एक समूह: उनका गोला-बारूद, मुक्ति दिलाने वाला प्रेम का हृदय। वह जीवित है, और मेरी तरह और मैं मर जाते हैं। मैं यहां खड़ा हूं और ओल्ड गार्ड को आने के लिए बुलाता हूं, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी। मैं लहरों के अलावा कुछ नहीं सुनता क्योंकि वे मेरे पैरों के नीचे की चट्टान को काटती हैं। लेकिन समय की कब्र में १८०० साल बीत जाने के बाद, यीशु पुकारते हैं और मनुष्य उत्तर देते हैं। यदि आवश्यकता होती है, तो वे अपने शरीर को जलाने के लिए दे देते हैं: यदि आवश्यकता होती है, तो वे अफ्रीका के हृदय में उसका अनुसरण करते हैं; लेकिन इससे भी बेहतर, वे उसके नाम पर धैर्यवान और विजयी जीवन जीते हैं। हां, अन्य योद्धा और मैं धूल में मिल जाएंगे, लेकिन यीशु मसीह हमेशा जीवित रहेंगे।

हर बार जब यीशु ने अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी की, तो प्रेरितों ने गर्व और गलतफहमी के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की। इससे येशुआ को उन्हें सेवकत्व या क्रॉस-बेयरिंग शिष्यत्व के बारे में सिखाने का अवसर मिला। एक रब्बी की शिक्षण स्थिति में बैठकर, यीशु ने बारहों को अपने पास बुलाया और कहा: जो कोई सबसे पहले बनना चाहता है उसे सबसे अंतिम और सभी का सेवक बनना चाहिए (मरकुस ९:३५)। विडंबना यह है कि जो लोग अब अंतिम होंगे, वे स्वर्ग के राज्य में पहले होंगे। ऐसा नहीं था कि मसीहा ने महत्वाकांक्षा ख़त्म कर दी थी. बल्कि, उन्होंने इसे पुनर्निर्देशित किया। शासन करने की महत्वाकांक्षा के स्थान पर उन्होंने सेवा करने की महत्वाकांक्षा को प्रतिस्थापित कर दिया।

१९९७ में, दो विश्व प्रसिद्ध महिलाओं की एक-दूसरे के कुछ ही दिनों के भीतर मृत्यु हो गई। इंग्लैंड की राजकुमारी डायना अपनी सुंदरता और स्टाइल के लिए सबसे ज्यादा जानी जाती थीं, जबकि कलकत्ता की मदर थेरेसा को भारत के सबसे गरीब लोगों की अथक सेवा के लिए सराहा जाता था। फिर सबसे पहले कौन था? फिर आखिरी कौन था? सच्ची निःस्वार्थता दुर्लभ है, और जब वह मिल जाती है तो उसका स्मरण किया जाता है।

प्रेरित इस बात पर बहस कर रहे थे कि जब मसीहा राज्य की स्थापना होगी तो उसमें सबसे बड़ा पद किसका होगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में कितनी बार बात की, उन्हें यह बात समझ में नहीं आई।

Gg – स्वर्ग के राज्य में सबसे महान मत्ती १८:१-५; मरकुस ९:३३-
३७; लूका ९:४६-४८ | 4

उन्होंने गलती से सोचा कि मसीहा साम्राज्यकी शुरुआत निकट थी, और इससे भी बुरी बात यह थी कि बारह लोगों में श्रेष्ठता की भावना थी। इसलिए, येशुआ एक छोटे बच्चे का उपयोग करके उन्हें बच्चों जैसा होने का पाठ पढ़ाते हैं।

परिणामस्वरूप, यीशु ने उनके विचारों को जानकर, एक छोटे बच्चे को बुलाया, जिसे उसने उनके बीच रखा। अब बच्चे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बच्चे किसी के करियर को आगे नहीं बढ़ा सकते, न ही किसी की प्रतिष्ठा बढ़ा सकते हैं। एक बच्चा हमें चीजें नहीं दे सकता। यह दूसरी तरह से है। एक बच्चे को चीजों की जरूरत होती है। बच्चों को उनके लिए चीजें अवश्य करनी चाहिए। तो यह ऐसा है मानो ईसा कह रहे हों, “यदि कोई गरीबों, सामान्य लोगों, ऐसे लोगों का स्वागत करता है जिनके पास कोई प्रभाव नहीं है, कोई धन नहीं है और कोई शक्ति नहीं है, जिन लोगों को उनके लिए कुछ करने की ज़रूरत है – वह व्यक्ति मेरा स्वागत करता है। वह व्यक्ति ईश्वर का स्वागत करता है।”



तब उस ने बालक को गोद में लेकर उन से कहा, जो कोई
इन छोटे बालकों में से किसी एक को मेरे नाम से ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मेरा स्वागत करता है, वह मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का स्वागत करता है। क्योंकि जो तुम सब में सबसे छोटा है वही बड़ा है (मती १८:२; मरकुस ९:३६-३७; लूका ९:४७-४८)। यीशु इन दयालु शब्दों में हर विनम्र और सरल विश्वासी के चारों ओर अपनी बाहें फैलाते हैं, वैसे ही जैसे वह आम तौर पर छोटे बच्चों के लिए करते थे। हमें कोमलता, देखभाल, दयालुता और प्रेम के साथ एक-दूसरे का स्वागत करना है, साथी विश्वासियों का स्वागत करने के लिए अपने दिल खोलने हैं, चाहे वे कोई भी हों। ऐसा करने में, हम प्रभु येशुआ और उनमें रहने वाले परमेश्वर की आत्मा को गले लगाते हैं। हमें अनमोल बच्चों की तरह एक-दूसरे की देखभाल करनी है।

जो लोग स्वर्ग के राज्य में महान बनना चाहेंगे उन्हें दृष्टिकोण में बदलाव लाना

Gg – स्वर्ग के राज्य में सबसे महान मत्ती १८:१-५; मरकुस ९:३३-
३७; लूका ९:४६-४८ | 5

होगा और बच्चों जैसा बनना होगा। और उसने कहा: मैं तुम से सच कहता हूं, जब तक तुम न बदलो और छोटे बच्चों के समान न बन जाओ, तुम कभी स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे (मत्ती १८:३)। येशु उन्हें सिखा रहे थे कि जैसे छोटे बच्चे अपने सांसारिक माता-पिता पर निर्भर होते हैं और शिष्यों को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए अपने स्वर्गीय पिता पर बच्चों जैसी निर्भरता प्रदर्शित करने की आवश्यकता होती है। केवल बच्चों जैसा विश्वास ही मुक्ति दिलाता है।

इसलिए, जो कोई भी इस बच्चे की नीच स्थिति लेता है वह स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा है। जबकि मसीहा साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए विश्वास आवश्यक है, राज्य में प्रेरितों की स्थिति एक बच्चे की स्थिति लेने पर निर्भर होगी। बच्चे मानते हैं कि घर में उनका कोई अधिकार नहीं है लेकिन वे अपने सांसारिक माता-पिता की इच्छा के अधीन हैं। और जो कोई मेरे नाम पर ऐसे एक बच्चे का स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है (मत्ती १८:४-५)। दूसरे शब्दों में, विनम्रता जितनी अधिक होगी, राज्य में स्थान उतना ही बड़ा होगा।

येशुआ के प्रेरितों को सेवा करवाने के बजाय सेवा पर ध्यान देने की जरूरत थी। दुनिया में, घमंड, षडयंत्र, या राजनीतिक चालबाज़ी आम तौर पर महानता का मार्ग दर्शाती है। यह इस वर्तमान युग में विशेष रूप से सच है। ऊपर चढ़ने का सबसे तेज़ तरीका अक्सर किसी और के सिर और कंधों पर कदम रखना होता है। मसीहा का आह्वान विनम्रता और आत्म-अपमान के लिए है। जैसे बच्चे अपने प्यारे माता-पिता में सरल विश्वास के साथ रहते हैं, वैसे ही प्रभु में विश्वास करने वालों को हमारे स्वर्गीय पिता में सरल, स्थायी विश्वास रखना चाहिए।

१९१५ में पादरी विलियम बार्टन ने लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित करना शुरू किया। एक प्राचीन कथाकार की पुरातन भाषा का उपयोग करते हुए, उन्होंने अपने दृष्टान्तों को सफेड द सेज के उपनाम से लिखा। और अगले पंद्रह वर्षों तक उन्होंने सफ़ेद और उसकी स्थायी पत्नी केतुराह के ज्ञान को साझा किया। यह एक ऐसी शैली थी जिसका उन्होंने आनंद लिया। कहा जाता है कि १९२० के दशक की शुरुआत तक सफ़ेद के अनुयायियों की संख्या कम से कम तीन मिलियन थी। एक सामान्य घटना को आध्यात्मिक सत्य के चित्रण में बदलना हमेशा बार्टन के मंत्रालय का मुख्य विषय रहा है।

एक कीट था जिसका घर अभयारण्य में था, और वह लंबे समय तक जीवित रहा और खुश था। क्योंकि उसके निवास का स्थान दो टैक्स के बीच, कालीन के किनारे पर एक अस्पष्ट छोटे कोण में था जहां सीढ़ी पल्पिट तक चढ़ती थी। और आसीन आदतों वाले पतंगे के लिए बेहतर निवास स्थान का चयन करना कठिन होता। और वह कभी भी, कभी भी अपने स्वयं के आग के पास से नहीं भटका, बल्कि उस कोने को सफ़ेद कर दिया जहाँ वह था। कहने का तात्पर्य यह है कि वह उस समय तक नहीं भटका जब तक इतिहास में यह अध्याय शुरू नहीं हुआ, और यह अध्याय बहुत लंबा नहीं है, और इसके बाद कोई अध्याय नहीं होगा। क्योंकि वह कीड़ा अब वहां नहीं रहा, और जो स्थान उसे जानता था वह अब उसे नहीं जानता।

Gg – स्वर्ग के राज्य में सबसे महान मत्ती १८:१-५; मरकुस ९:३३-
३७; लूका ९:४६-४८ | 6

अब यह कीट अत्यंत प्रसन्न था; क्योंकि कालीन फजी था, और यह सबसे अच्छा भोजन था जो एक कीट चाह सकता था, और चौकीदार के ब्रश उसके पास नहीं आए। और कीट ने ऑर्गन की बात सुनी, और उसने सोचा कि संगीत उसकी उन्नति के लिए है, और उसने उपदेश और प्रार्थनाएँ सुनीं, और जहाँ तक वह जानता था कि वे उसे संबोधित थे।

और उसने अपनी आंखें ऊपर उठाईं, और क्या देखा, कि नेव की लंबाई से होते हुए गजों और गजों तक कालीन बिछा हुआ है, और उसने दाहिने हाथ और बाएं ओर देखा, और वहां गजों तक कालीन बिछा हुआ था। गिरजाघर। और उसके पास मनभावने स्थानों में रेखाएं पड़ीं, और उसके पास अच्छा भाग हुआ।

परन्तु वह मोटा हो गया, और अभिमानी हो गया। और उस ने मन ही मन कहा; अब जाओ; मैं अपनी विरासत का पता लगाऊंगा; क्योंकि देखो, यह सब मेरा है, और मेरे लिये ही सृजा गया है। और वह अपने कोने से बाहर निकल गया, और केंद्र गलियारे की ओर यात्रा शुरू कर दी।

और जब वह लगभग एक इंच और आधा इंच बाहर निकल गया, तो देखो, चौकीदार एक वैक्यूम क्लीनर के साथ आया, और मोथ के साथ क्या हुआ, उसने अभी तक अपने मन में स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया है। क्योंकि वह तेज़ हवा के साथ उड़ गया था, और एक खोखली सड़क पर खींच लिया गया था, और एक रबर ट्यूब उड़ा दी गई थी, जो एक लोहे के पाइप की ओर ले जाती थी और तहखाने में चली गई थी, और धूल में गहराई तक दब गई थी। और जब वह ध्यान कर रहा था, तो चौकीदार आया, और कुंड खोला, और एक फावड़ा डाला, और धूल को ऊपर उठाया और उसे धधकते हुए अग्नि भट्टी में फेंक दिया, और जब यह हुआ तो पतंगा धूल में था। और उस समय से मोथ के इतिहास में कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं था। लेकिन शायद ही कोई ऐसा कीट हुआ हो जिसकी भविष्य की संभावनाएँ उस कीट से अधिक उत्साहजनक हों, यदि उसका सिर सूज न गया हो, और उसने यह न सोचा हो कि वह पूरे प्रतिष्ठान का बॉस है।

अब जो लोग यह सोचते हैं कि ब्रह्माण्ड उनकी अपनी सुविधा के लिए बनाया गया है, उनके लिए बेहतर होगा कि वे इसके अपने छोटे से कोने में ही रहें; क्योंकि यदि वे वहां से निकलते हैं जहां महत्वपूर्ण चीजें घटित होती हैं, तो या तो उनके साथ या उनके सिद्धांत के साथ कुछ घटित होने की संभावना है।